भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या:1742
उत्तर देने की तारीख: सोमवार, 10 मार्च, 2025
19 फाल्गुन,1946 (शक)

तमिलनाडु के प्राचीन स्थलों में क्षैतिज खुदाई

1742. डॉ. टी. सुमति उर्फ तामिझाची थंगापंडियन:

क्या **संस्कृति** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की 2500 ईसा पूर्व से पहले के लौह युग के भौतिक साक्ष्य का पता लगाने के लिए तमिलनाडु के प्राचीन स्थलों में क्षैतिज खुदाई करने की कोई योजना है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) क्या केन्द्र सरकार की गूढ़ सिंधु लिपि की व्याख्या को प्रोत्साहित करने और द्रविड़ संस्कृति की पुरातन ब्राह्मी लिपि के साथ इसका संबंध स्थापित करने की कोई योजना है;

(घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(ङ) सरकार द्वारा तमिलनाडु और देश के अन्य राज्यों तथा श्रीलंका, मिस्र, चीन, मलेशिया, थाईलैंड, कम्बोडिया और इंडोनेशिया जैसे देशों में पाए गए पुरातन ब्राह्मी अभिलेखों का अर्थ निकालने और उन्हें समझने और अभिलेखित करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं?

उत्तर
संस्कृति और पर्यटन मंत्री
(श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) और (ख): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा अमूर, चेन्गलपट्टू जिला, तमिलनाडु में महापाषाण समाधि एवं स्तूप का पुरातात्विक उत्खनन किया जा रहा है। इस उत्खनन से अभी तक कोई वैज्ञानिक आंकड़ा प्राप्त नहीं हुआ है। इसके अलावा, भारत सरकार ने तमिलनाडु सरकार की सिफारिश पर राज्य में दस पुरातात्विक उत्खनन करने की मंजूरी भी दी है।

(ग) और (घ): संस्कृति मंत्रालय ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) के माध्यम से सिंधु लिपि को समझने और इसे अन्य प्राचीन लिपियों से इसके जुड़े होने की संभावना की खोज के लिए कुछ पहलें की हैं। सिंधु लिपि को समझने के लिए शोध को बढ़ावा देने की गतिविधियों में संगोष्ठियों का आयोजन करना और इससे संबंधित कार्यों का प्रकाशन करना शामिल है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की पुरालेख शाखा का मुख्य उद्देश्य प्राचीन लिपियों का अध्ययन करना और इस क्षेत्र में शोध को आगे बढ़ाना भी है।

(ङ): भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की पुरालेख शाखा शिलालेखों की प्रतिलिपि बनाने के लिए निरंतर पुरालेख सर्वेक्षण कर रही है जिसमें तमिलनाडु के साथ-साथ भारत के अन्य राज्यों में पाए जाने वाली प्राचीन ब्राह्मी शिलालेख भी शामिल हैं। पुरालेख शाखा के विद्वानों ने कंबोडिया, श्रीलंका और वियतनाम जैसे विदेशी देशों में भी शिलालेखों का अध्ययन किया है।

*****